आज का पुरुषार्थ, 26 April 2022

<u>**From**</u>: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आज अपने शक्तियों को पहचाने .. हम इस संसार को जगाने के निमित्त बने है .. हम कमजोर नहीं है "*

भाग्यवान आत्माओं को यह सुन्दर **संगमयुग** प्राप्त हुआ है। जिसमें भगवान सामने है। **भाग्य लेकर हमारे द्वार पर खड़ा है।** हमारा आह्वान कर रहा है। हमें प्यार दे रहा है। अपनापन दे रहा है।

जिसको हम ढूंढते थे, जिसके क्षणिक दर्शनों के लिए हम तरसते थे, जिससे छोटी छोटी चीजें मांगते रहते थे, और हमें पता भी नहीं था कि जो कुछ हम मांग रहे है वह हमें मिलेगा भी क्या?

वो अब हमें **भरपूर** करने के लिए, जन्म जन्म हमें **सुखी बनाने** के लिए हमारे सामने आ गया है। अपनी ओर से हमें दे रहे है, मांगने की जरूरत ही नहीं। यहाँ **शक्तियाँ** दे रहा है, सम्पूर्ण सुख शान्ति दे रही है। **सर्व खजाने दे रहा है। वरदान दे रहा है।**

भविष्य के लिए तो न जाने क्या क्या लेकर आ गया है। उसके आप लिस्ट बना सकते है।

जैसे विदेशी आक्रमणकारी यहाँ आये, भारत से धन-सम्पदा लुटने के लिए। और लेकर गये, फिर भी भारत **भरपूर** रहा।

तो अथाह **धन-सम्पदा** देने भगवान हमारे द्वार पर उपस्थित हुए है। और हम क्या कर रहे है? कहाँ उलझे हुए है? क्या अपने मन को **शान्त** किया है? क्या भगवान को पाकर इस ईश्वरीय सुखों से स्वयं को भरपूर किये है?

कहाँ उलझें है? जहाँ उलझे है वहाँ तो उलझना शोभा ही नहीं देता! वहाँ तो हम जैसे बी.के. आत्मा उलझ ही नहीं सकते? वहाँ से निकलकर अपने महान कर्तव्य को पहचाने।

तुम्हें संसार को जगाना है। तुम्हें संसार में **सुख शान्ति** की लहरें फैलानी है। संसार से मनुष्य दुःखी होकर रो रहे है, चिल्ला रहे है। तुम्हें उनके आँसू पोछने है तुम्हारा जीवन रोने के लिए नहीं।

मातृशक्ति तुम्हारा जीवन रोने के लिए नहीं। तुम्हें तो रोतु को हँसाना है। तुम्हें तो सबमें बल भरना है। अपने को पहचानों। **अपनी शक्तियों को पहचानों**। तुम महान कुल के वंशज हो। तुम भगवान के संतान हो।

तुम **अपने परम कर्तव्य को पहचानों।** चिन्तन करो .. तुम्हारा यह जीवन किस किस महान कार्य के लिए हुआ है? स्वयं भगवान ने जन्म दिया। जन्म देते ही शक्तियाँ और वरदान दिये। श्रेष्ठ वरदानों से भाग्य लिख दिया। ईश्वरीय खजाना दिया।

हमें पालना दी। अब जिस महान कार्य के लिए उसने हमें श्रृंगार किये है, हमें महानताओं से भरा है, हमें बस वहीं करना है। बाकी व्यर्थ चीजों की ओर ज़रा भी ध्यान नहीं देना है।

तो कभी भी आपस में नहीं उलझना। अगर छोटी छोटी बातों के कारण आप आपस में उलझते है, टकराते है वा घबड़ा जाते है और अपने आंतरिक शक्तियों को नष्ट करते है तो यह समझदारी नहीं है। इनसे बाहर निकल जाओ।

आ जाओ अपने **स्वमान की महान स्टेज पर।** और इस संसार को बहुत कुछ देने के लिए स्वयं को तैयार करो। तो आज से सभी झंझटों से मुक्त साक्षी भाव में स्थित इस स्वमान में रहेंगे ...

" मैं पूर्वज हूँ .. संसार का पालना करने वाली महान आत्मा .. मेरा जन्म ही महान कार्य के लिए हुआ है "

इस ग्रेट एन्ड गुड फीलिंग में रहते हुए ग्लोब के ऊपर बैठेंगे, अभ्यास करेंगे ...

" बाबा से रंग बिरंगी किरणें मुझ पर पड़ रही है .. और यह किरणें चारों ओर फैल रही है .. पूरे कल्पवृक्ष में जा रही है .. मेरे सिर के ऊपर स्थित यह कल्पवृक्ष पूरे संसार की पालना कर रही है "

।। ओम शान्ति ।।